LL.B IInd SEMESTER
ECONOMICS (INDIAN ECONOMICS)
UNIT -2

Infrastructure development (आधारभूत संरचना का विकास)

1. **Introduction:-**किसी देश की समृद्धि प्रत्यक्ष रूप से कृषि तथा उद्योग के विकास पर निर्भर करती है। किंतु कृषि–उत्पादन के लिए संचालन शक्ति(Power), उधार एवं परिवहन सुविधाओं की आवश्यकता होती है, तथा औद्योगिक उत्पादन के लिए केवल मशीनरी एवं संयंत्र ही नहीं चाहिए बल्कि कुशल श्रम शक्ति, प्रबंध, ऊर्जा, बैंकिंग एवं बीमा सुविधाओं की भी जरूरत होती है। इसके अतिरिक्त विपणन सुविधाओं, परिवहन सेवाओं की भी आवश्यकता होती है, जिसमें रेलवे, सड़कें, संचार सुविधाएं आदि शामिल की जाती हैं। इन सभी सुविधाओं एवं सेवाओं को सामूहिक रूप में आधार संरचना कहते हैं।
2. आधार संरचना सुविधाओं को आर्थिक एवं सामाजिक उपरिव्यय (Economic and Social overheads) भी कहते हैं ।इनमें सम्मिलित हैं:-
    i. **ऊर्जा:-** कोयला, बिजली, तेल और अन्य अपारंपरिक स्रोत;
    ii. **परिवहन:-** रेलवे, सड़कें, जहाजरानी और नागरिक परिवहन;
    iii. **संचार:-** डाक एवं तार, टेलीफोन, टेली संचार(Telecommunication) आदि;
    iv. बैंकिंग, वित्त एवं बीमा;
    v. विज्ञान एवं तकनीकी(Technology);
    vi. **सामाजिक उपरिव्यय:-** स्वास्थ्य, सफाई एवं शिक्षण।

स्वतंत्रता के पश्चात आधार संरचना का विकास

- भारत में पहली पंचवर्षीय योजना के आरंभ से ही आधार संरचना के विकास पर बल दिया गया ।इसके लिए योजना परिव्यय का 50% से भी कुछ अधिक खर्च किया गया।
- सरकार द्वारा आधार संरचना में किए गए भारी निवेश के कारण ही पिछले पांच दशकों के दौरान कृषि उत्पादन में तिगुनी वृद्धि और औद्योगिक उत्पादन में 7 गुना वृद्धि प्राप्त किया जा सका।
- परंतु ग्राम क्षेत्रों की तुलना में नगरीय क्षेत्रों मैं इसका विकास अधिक हुआ ।ग्रामों में सिंचाई, बिजली करण उपलब्ध कराई गई , परंतु केवल महानगरों और शहरों में रहने वाले लोग ही पावर , परिवहन, संचार, बैंकिंग और शिक्षा एवं स्वास्थ्य जैसे सामाजिक उपरिव्यय का पूर्ण लाभ उठा रहे हैं।

- **आधार संरचना**

1	2	3	4	5	6
ऊर्जा	**परिवहन**	**संचार**	**सेवा क्षेत्र**	**विज्ञान एवं तकनीकी**	**सामाजिक उपरिव्यय**
• कोयला • बिजली • तेल • अन्य अपारंपरिक स्रोत	• रेल • सड़कें • जहाजरानी • नागरिक परिवहन	• डाक • तार • टेलीफोन • टेली संचार	• बैंकिंग • वित्त • बीमा		• स्वास्थ्य • सफाई • शिक्षण

1. **ऊर्जा(Energy):-** ऊर्जा के मुख्य स्रोत हैं।

ऊर्जा

1	2
वाणिज्यिक ऊर्जा	**गैर वाणिज्यिक ऊर्जा**
i. कोयला	i. ईंधन-लकड़ी
ii. तेल	ii. वनस्पति अपशिष्ट पदार्थ
iii. बिजली	iii. पशु गोबर

भारत में ऊर्जा के गैर पारंपरिक स्रोत:-

गैर पारंपरिक ऊर्जा

1	2	3
सौर ऊर्जा Solar Energy	पवन ऊर्जा Wind Energy	ज्वार ऊर्जा Tidal Energy

भारत में ऊर्जा संकट के कारण:-

1) आर्थिक विकास की गति बढ़ने से वाणिज्यिक ऊर्जा (कोयला, तेल, बिजली) की मांग लगातार बढ़ती जा रही है| लेकिन इसकी पूर्ति में भी वृद्धि हो रही है, परंतु यह पर्याप्त नहीं है, इसलिए मजबूर होकर आयात पर निर्भर होना पड़ रहा है|
2) भारत में ऊर्जा के बढ़ते हुए संकट का सामना करने के लिए कोयले के उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि होनी चाहिए , परंतु कुछ वर्षों से यह बहुत बुरी अवस्था में है|
3) बिजली की मांग एवं पूर्ति में अंतर कम होने की अपेक्षा बढ़ रही है | औद्योगिक एवं कृषि विकास के लिए बिजली की मांग तेजी से बढ़ रही है|
4) ग्रामों में ईंधन के लिए लकड़ी का अभाव गंभीर ऊर्जा संकट विद्यमान होने का संकेत है|

ऊर्जा समस्या के समाधान के उपाय:-

1) तेल के उत्पादन को बढ़ावा देना|
2) पेट्रोलियम एवं स्नेहको (Lubricant) के उपभोग पर नियंत्रण|
3) **तेल का कोयले से प्रतिस्थापन :-** ईंधन नीति (Fuel Policy Committee) ने कई उद्योगों में भट्टी के तेल (Furnace oil) का कोयले से प्रतिस्थापन करने का सुझाव दिया है| जिसमें पावर हाउस भी शामिल है|
4) **विद्युत शक्ति का विस्तार:-** जल-विद्युत ऊर्जा एक नवीकरणीय स्रोत (Renewable Source) है, इसलिए पावर के विस्तार को अधिकतम करना होगा और यही एक आदर्श समाधान है|
5) **बायोगैस:-** बायोगैस प्लांट का दोहरा लाभ है -एक ओर इससे ईंधन और दूसरी ओर खाद प्राप्त होगी | गैस खाना पकाने और रोशनी के लिए इस्तेमाल की जा सकती है और इससे कृषि क्रियाएं भी की जा सकती हैं|

2. **परिवहन और आर्थिक विकास**

Introduction:- यदि कृषि और उद्योगों को अर्थव्यवस्था की काया समझा जाता है, तो परिवहन और संचार को उसकी नसे हैं| परिवहन कच्चे माल, ईंधन, मशीनरी आदि को उत्पादन के स्थानों तक पहुंचाने के लिए अनिवार्य है| परिवहन विकास से दूरदराज के इलाके और संसाधन उत्पादन के लिए खुल जाते हैं| किसी क्षेत्र में कृषि, वन और खनिज संसाधन अधिक मात्रा में उपलब्ध हो सकते हैं, परंतु उनका विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक वे पहुंच से बाहर रहेंगे|

परिवहन प्रणाली संसाधनों का बेहतर और पूर्ण प्रयोग करने में सहायता देती है, इससे औद्योगीकरण को सहायता मिलती है|

3. **संचार प्रणाली:-** संचार प्रणाली में डाक, तार, टेली संचार व्यवस्था और सूचना सेवाएं शामिल हैं| बाजारों के बारे में आवश्यक सूचना उपलब्ध कराकर और आवश्यक प्रेरणा देकर भी संचार प्रणाली क्रेताओं एवं विक्रेताओं को प्रभावी रूप से जोड़ती है और इस प्रकार अर्थव्यवस्था को त्वरित (accelerate) करती है|

4. **सेवा क्षेत्र:-** सेवा क्षेत्र को वित्तीय क्षेत्र भी कहा जाता है| सेवा क्षेत्र वित्त सहायता देता है, हमारे आर्थिक विकास के लिए| कृषि क्षेत्र के विकास में भी सेवा क्षेत्र की अहम भूमिका है, इसके अतिरिक्त सेवा क्षेत्र रोजगार के अवसर लोगों को प्रदान करता है| इस प्रकार हमारे समाज में जो असमानताएं फैली हुई है उसे दूर करने में सेवा क्षेत्र की अहम भूमिका है|

5. **विज्ञान एवं तकनीकी:-** भारत परमाणु शक्ति के क्षेत्र में विश्व के कुछ गिने हुए देशों में है | इस क्षेत्र में भारत स्वयं अपनी परमाणु प्रौद्योगिकी विकसित की है, तथा परमाणु ईंधन चक्र को पूरी तरह चलाने में समर्थ है |

1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की गई । परमाणु शक्ति के आवश्यक तत्व यूरेनियम व थोरियम भारत में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है ।

6. **<u>सामाजिक आधारभूत ढांचा:-</u>** आज के युग में भारत पूंजी में विनियोग आर्थिक विकास की एक प्रमुख शर्त एवं मूल आवश्यकता बन चुकी है । मानवीय संसाधनों में विनियोग का अर्थ शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य, पोषण युक्त भोजन व उचित आवास व्यवस्था आदि।